'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, April 2023, Volume-15 Issue-10

प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों के साहित्य में नारी योगदान

डॉ. सुनील कुमार यादव
हिन्दी विभागाध्यक्ष, विद्या वर्धक संघ कला वाणिज्य एवं बी.सी.ए. महाविद्यालय,विजयपुर
Corresponding author- डॉ. सुनील कुमार यादव
Email- drssyyvv@gmail.com

Abstract (सार)

हिन्दी साहित्य जगत को अनेक महान हस्तियों ने समय-समय पर अपने ज्ञान से सींचा है । इस दिशा में प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों का योगदान हिन्दी साहित्य जगत कभी नहीं भूल सकता है । सजीव भाषा के साथ यथार्थपरक घटनाओं को राष्ट्रीयता से जोड़ना का प्रयास, मानव चरित्र के अनेक मनोभावों से पात्रों की सृष्टि, स्त्री त्रासदी पर सवाल उठाना, स्त्री पीड़ा को समझना, इन पीड़ाओं से स्त्री समाज को मुक्ति की ओर ले जाना, प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों के साहित्य का मूल आशय रहा है। है। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ एक हिन्दी भाषी महिला कहानीकार 'राजेन्द्र बाला घोष' के द्वारा हुआ है यह बहुत बड़ी खासियत हिंदी साहित्य की रही है। प्रेमचंद पूर्व युग कि महिला साहित्य कारों ने परंपरागत रूढ़ियों से जकड़ी हुई नारी जीवन को इस शिकंजे से शास्त्र के नाम पर महिलाओं पर हो रहे अन्याय तथा अनाचारों से मुक्त करने के लिए इन्होंने नारी शिक्षा पर अधिक बाल दिया। नारी को अपने पति का चुनाव करने की, तलाक देने की मांग नारी के मौलिक अधिकार है यह कहकर समाज में एक नया परिवर्तन लाने का कार्य इनका रहा है। समकालीन समाज में व्याप्त अनेक रूढ़ियों नकारने का कार्य अपने साहित्य के माध्यम से करती रही है। इनका लेखन इतना आक्रामक रहा की इन्होंने समाज में सदियों से चली आ रही नारी को मुक्त करने कोई कसर नहीं छोड़ी है ।

प्रमुख शब्द : त्रासदी, पीड़ा, वेदना, राष्ट्रीयता, साहित्य, समाज, आधुनिक, जमींदारों, अंग्रेजी शासन , सांस्कृतिक परिवेश, त्याग सहनशीलता, धर्म के प्रति आस्था, अंधविश्वास, मर्यादा की रक्षा

प्रवेश

समाज हमेशा परिवर्तन कि ओर अग्रसर होता रहता है इस परिवर्तन का परिणाम समाज के हर अंग पर पड़ता है। हिन्दी साहित्य जगत भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है । हम सब इस बात से परिचित है कि हिन्दी साहित्य इतिहास बहुत गौरवपूर्ण रहा है । हिन्दी साहित्य जगत को अनेक महान हस्तियों ने समय-समय पर अपने ज्ञान से सींचा है । इस दिशा में प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों का योगदान हिन्दी साहित्य जगत कभी नहीं भूल सकता है । सजीव भाषा के साथ यथार्थपरक घटनाओं को राष्ट्रीयता से जोड़ना का प्रयास, मानव चरित्र के अनेक मनोभावों से पात्रों की सृष्टि, स्त्री त्रासदी पर सवाल उठाना, स्त्री पीड़ा को समझना, इन पीड़ाओं से स्त्री समाज को मुक्ति की ओर ले जाना, प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों के साहित्य का मूल आशय रहा है। इस अवधि कि महिला लेखिका स्त्री शिक्षा से लेकर तत्कालीन राष्ट्रीय , सांस्कृतिक परिवेश को परास्त करती नजर आती है, अपने साहित्य के माध्यम से समाज द्वारा स्त्री पर हो रहे अन्याय के खिलाप आवाज उठाना, उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागृत करना आदि विषयों को अपने साहित्य का मूल अंश के रूप में चुनकर नारी समाज को अंधकार से प्रकाश कि ओर ले जाने का कार्य अविरत चलता रहा है, इस दिशा में महिला लेखिकाओं का पात्र बहुत बड़ा तथा अविस्मरणीय रहा है। आधुनिक हिन्दी कहानी लेखन में महिला साहित्यकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है इस बात से हम सब परिचित है। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ एक हिन्दी भाषी महिला कहानीकार 'राजेन्द्र बाला घोष' के द्वारा हुआ है यह बहुत बड़ी खासियत हिंदी साहित्य की रही है। इन कहानियों में भारतीय नारी की स्थिति तथा उस समय व्याप्त सामाजिक व्यवस्थाओं का प्रचालन प्रथाओं का विवरण मिलता है। समय के अनुसार नारी त्रासदी, पीड़ा, वेदना, विधवा नारी की समस्या, अकेली नारी कि समस्या, बाल विवाह से पीड़ित, सामाजिक प्रताड़नाओं से त्रस्त नारी तथा स्त्री समुदाय से संबंधित अनेकों अनगिनत समस्याओं पर सवाल उठाकर समाज को सचेत करने का प्रयास किया है।

बीसवीं सदी की प्रमुख तथा प्रथम महिला लेखिका 'राजेन्द्र बाला घोष' का नाम हिन्दी महिला कहानीकारों में बड़े गौरव के साथ लिया जाता है । इन्होंने कहानी, निबंध तथा आलोचना विविध विधावों पर रचना की है। कहानी में नवीनता और परंपरा दोनों भावों को ध्यान में रखकर मौलिक कथा लेखन करने में 'बंग महिला' का नाम सर्व प्रथम लिया जाता है। हिन्दी महिला कहानीकार 'बंग महिला' द्वारा रचित 'दुलाईवाली' कहानी सन् 1907 में ' सरस्वती पत्रिका' में प्रकाशित हुई थी । इनका पूरा नाम राजेन्द्र बाला घोष जिन्हें 'बंग महिला' नाम से ख्याति

प्राप्त थी जो एक बंगाली महिला थी। इनका जन्म सन् 1882 में वाराणसी के कोदई चौकी मुहल्ले में हुआ था। इनके पूर्वज कलकत्ता के चंद्रनगर जिले के खोलसिनी नामक गाँव के निवासी थे जो 1858 में बनारस में आ बसे थे। पिता का रामप्रसन्न घोष और माता का नाम निरदवासिनी घोष था। राजेन्द्र बाला घोष के पति का नाम पूर्णचन्द्र था।

" हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार रामचन्द्र शुक्ल के संपर्क में आने से इन्होंने हिन्दी में साहित्य सृजन कार्य किया। प्रारंभ में राजेन्द्र बाला घोष बंगाली कहानियों को हिन्दी में अनूदित किया। "कुसुम संग्रह' कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है। "1 साहित्यकारों का मानना यह है कि इन्होंने कोई उपन्यास नहीं लिखा परंतु बंगाल से हिन्दी में उपन्यास को अनूदित कर हिन्दी उपन्यास लेखन के लिए भाव-भूमि अवश्य तैयार किया था। इतिहास के पन्नों से हम सभी को यह अच्छी तरह ज्ञात है कि पच्छिम संस्कृति का प्रभाव सर्वप्रथम बंगाल पर पड़ा था। परिणाम स्वरूप बंगाली महिलाओं पर साहित्य का प्रभाव पड़ा और 'बंग महिला' ने अनूदित कहानियाँ लिखी, जिसमें बंगाली महिलाओं का चित्रण देखने को मिलता है। सन 1904 से 1917 तक इनकी रचनाएं हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाओं में 'एक प्रवासीनी बंग महिला' तथा 'कभी बंग महिला' नाम से प्रकाशित होती रही है। 'बंग महिला' ने 'कुम्भ में छोटी बहू' 'दान प्रतिदान' मुरला दालिया' 'मन की दृढ़ता' आदि अनूदित कहानियाँ लिखी है। "द्विवेदीकाल की बंग महिला' हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी लेखिका है। लेखिका के रूप में बंग महिला का नाम चिर स्मरणीय है। इनका वास्तविक नाम श्रीमती राजेंद्रबाल घोष है। "2 दुलाईवाली कहानी के संबंध में डॉ. पुष्पलता का कहना इस प्रकार है " इस कहानी को हिन्दी की मौलिक कहानी होने का श्रेय दिया जाता है। प्रस्तुत कहानी 1907 में सरस्वती भाग 8 संख्या 5 में प्रकाशित हुई थी। स्थानीय अंकन यथार्थ चित्रण और पात्रानुकूल भाषा है। "3 आधुनिक हिन्दी कहानी लेखन में महिला साहित्यकारों का योगदान भी रहा है, आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ एक वह भी हिन्दी भाषी महिला कहानीकार के द्वारा हुआ है यह खासियत हिंदी साहित्य की रही है। 1950 के आस पास इनकी मृत्यु हो गई ऐसा माना जाता है। परंपरागत रूढ़ियों से जकड़ी हुई नारी जीवन को इस शिकंजे से शास्त्र के नाम पर महिलाओं पर हो रहे अन्याय तथा अनाचारों से मुक्त करने के लिए इन्होंने नारी शिक्षा पर अधिक बाल दिया। नारी को अपने पति का चुनाव करने की, तलाक देने की मांग नारी के मौलिक अधिकार है यह कहकर समाज में एक नया परिवर्तन लाने का कार्य इनका रहा है। समकालीन समाज में व्याप्त अनेक रूढ़ियों नकारने का कार्य अपने साहित्य के माध्यम से करती रही है। इनका लेखन इतना आक्रामक रहा की इन्होंने समाज में सदियों से चली आरही नारी को मुक्त करने कोई कसर नहीं छोड़ी। राजेन्द्र बाला घोष की रचना संसार इस प्रकार है " हिन्दी के ग्रंथकार'(1904) जो एक मूल निबंध है, 'अंडमान द्विप के निवासी'(1904) जो अनूदित निबंध है , 'नीलगिरी पर्वत के निवासी टेड़ा लोग (1904) जो प्रवासी साहित्य है, 'चंद्रदेव से मेरी बात' (1904), 'जोधा बाई'(1904) जो मूल निबंध है, 'पति सेवा' (1906), जो प्रबंध का भावानुवाद है , 'गृह' (नारी शिक्षा पर निबंध - बंगला से भावानुवाद), 'गृहचार्य'(1906) जो एक मूल निबंध है, 'स्त्रियों की शिक्षा'(1906) मूल निबंध है, 'संगीत और सुई काम' (1914) जो स्त्री शिक्षा संबंधी लेख है, 'कुम्भ में छोटी बहु'(1906), 'दुलाईवाली (1907), 'मुरला'(1908), 'भाई-बहन'(1908), 'हमारे देश की स्त्रियों की दशा' (1908) जो एक निबंध है, 'दलिया'(1909)अनूदित कहानी है, 'संसार सुख'(1910) अनूदित कहानी है, 'नारी रत्न भगवती देवी'(1910) अनूदित निबंध है, 'तिल से ताड़'(1906) अनूदित औपन्यासिक, 'मातृहीना' अनूदित कहानी है, 'अपूर्व प्रतिज्ञापालन' अनूदित कहानी है, 'दान प्रतिदान' अनूदित आख्यान है, 'हृदय परीक्षा'(1914) अनूदित कहानी है, 'मन की दृढ़ता'(1914) अनूदित कहानी है, 'अब्बूल फजल' अनूदित निबंध है। 1950 के आस पास इनकी मृत्यु हो गई ऐसा माना जाता है। "अपने रामचन्द्र शुक्ल की प्रेरणा से हिन्दी में लिखना शुरू किया। आप हिन्दी में 'बंग महिला' और बंगाल में 'प्रवासिनी' नाम से कहानियाँ लिखती थीं। आपने हिन्दी और बंगाल दोनों में मौलिक कहानियों की रचना की है। कुसुम-संग्रह आपकी कहानियों का संग्रह है, जो संवत् 1969 विक्रमी में प्रकाशित हुआ । " 4 द्विवेदिकालीन कवयित्रियों में 'श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा' का नाम प्रसिद्ध रहा है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के फैजाबाद में 1913 में हुआ था। पिता का नाम महेश चरण सिन्हा। देश की आजादी के आंदोलन में इनका सक्रिय योगदान रहा है। प्रगतिशीलता इनके साहित्य में अधिक प्रमाण में देखने को मिलता है। श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा नारी और पुरुष समान धरातल पर चले यही आशा भावना रखने वाली लेखिका रही है। इसीलिए इनका साहित्य भी इस दृष्टि से अछूता नहीं रहा है। नारी के पक्षधर रही लेखिका नारी मन की पीड़ा को अपने साहित्य में प्रमुख स्थान दिया है। नारी की वेदना को साहित्य का प्रमुख केंद्र बनाकर साहित्य की रचना करने वाली लेखिका नारी को न्याय दिलाने की कोशिश करती रही है। कहानी संग्रह 'अचल सुहाग'(1939), और 'वर्ष गाँठ'(1942) तथा 'सुलगते कोयले' आदि है। 'विहाग'(1940), 'आशापर्व'(1942) तथा 'बोलों के देवता'(1954) है। 'अचल सुहाग' इनकी प्रमुख कहानी संग्रह है जिसमें नारी की पीड़ा, वेदना, त्रासदी, आदि का चित्रण किया गया है। 'व्यक्तित्व की भूख' 'मेरी जाँ लूट गयी' 'विवाहित' आदि मार्मिक कहानियों में नारी की अस्मिता को खोजती नजर आती है। प्रमुख रूप से नारी अस्मिता पर आधारित इनकी कहानियाँ उस समय की मांग रही है। पंथिनी, प्रसारिका, वैज्ञानिक बोधमाला, कथा कुंज, आँगन के फूल, फूलों के गहने, आंचल के फूल, दादी का मटका आदि अन्याय रचनाएँ है । इनका सम्पूर्ण साहित्य युगीन पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं का चित्रण यथार्थ रूप में देखने को मिलता है। प्रेम संबंधी

भारतीय नारी की बदलती सोच को साहित्य का प्रमुख विषय बनाया है। इनकी नारियाँ पति द्वारा पीड़ित होने पर , परित्यक्त होने पर भी साहस नहीं छोड़ती जीना चाहती है। "इनकी कहानियों में पति संयुक्त-परिवार , सामाजिक आचार संहिता आदि के नीचे रूढ़ियों में पिसती नारी का क्रंदन भी है और विद्रोह की क्षुब्ध वाणी भी है। "5 डॉ. रामविलास शर्मा कहते है "पुस्तक का संबंध आज के विमत्स्य यथार्थ से अधिक कल सुनहले स्वप्नों से काम हाँ और यथार्थ का ज्ञान ही मनुष्य को परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है। इनके दो कहानी संग्रह है अंचल सुहाग और वर्ष गांठ । " लखनऊ आकाशवाणी केंद्र से इनका मधुर संबंध था। अपने मीठे कंठों से कविता का पाठ करने वाली सुमित्रा कुमारी सिन्हा अपने समय में अत्यंत जागृत तथा प्रगतिशील लेखिका, कवयित्री रही है जिनका देहावसान 30 सितंबर 1994 लखनऊ में हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान को हिन्दी का प्रथम कवयित्री माना जाता है तथा एक प्रतिभा संपन्न कहानीकार के रूप में भी देखा जाता है। 'झांसी की रानी कविता' का नाम लेते ही सुभद्रा जी का नाम जुबां पर अपने आप आ जाता है। राष्ट्रीय वसंत कोकिला के नाम से प्रख्यात सुभद्रा जी का जन्म 16 अगस्त 1904 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के निकट निहालपुर में हुआ था। पिता का नाम रामनाथ सिंह था। सन 1913 में 'नीम की पेड़' पर लिखी गई कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में छपी थी। पंद्रह वर्ष की आयु में काव्य रचना शुरू कर दिया था। अपना बचपना इन्होंने इलाहाबाद में व्यतीत किया था। सन 1919 में खंडवा के लक्षण सिंह से विवाह के बाद जबलपुर में रहने लगी। सन् 1921में महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली पहली महिला का बनी । 15 फरवरी 1948 में एक आकस्मिक दुर्घटना की वजह से देहावसान हो गया। सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रथम कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' (1932), है जिसमें 15 कहानियाँ संकलित है। उनका दूसरा कहानी संग्रह 'उन्मादिनी'(1934) है जिसमें 9 कहानियाँ संकलित है। और 'सीधे सादे चित्र' तीसरा व अंतिम कहानी संग्रह है जिसमें 14 कहानियाँ संकलित है। कुल मिलाकर इन्होंने 46 कहानियाँ तथा 88 कविताओं की रचना की है जो नारी मन की त्रासदी तथा देश की आजादी के मुद्दों पर आधारित है। लोकप्रिया कथाकार के साथ लोकप्रिय कवयित्री भी रही है। इनकी कलम ने सदा ही नारी पक्ष लिया था और स्वाधीनता की लड़ाई में स्वतंत्र सेनानियों की आवाज और बुलंदी तक पहुँचने का कार्य इनका रहा है। जमींदारों तथा अंग्रेजी शासन से त्रस्त सामान्य जन की पीड़ा का चित्रण भी इनके साहित्य में देखने को मिलता है। इन कहानियों में भारतीय नारी की स्थिति तथा उस समय व्याप्त सामाजिक व्यवस्थाओं का प्रचालन प्रथाओं का विवरण मिलता है। वे समय के अनुसार नारी त्रासदी को, विधवा नारी की समस्या का अंकन करती है तो विधवा विवाह का समर्थन भी करती है। विधवा विवाह पर 'किस्मत' तथा 'नारी हृदय' कहानियाँ प्रमुख है ।

राष्ट्रीय भावना, आदर्श तथा यथार्थ से इनकी कहानियाँ ओतप्रोत थी पंद्रह वर्ष में ही राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया था। इनकी कहानियों की स्त्रियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व खोजती नजर आती है । नारी की त्याग सहनशीलता, धर्म के प्रति आस्था, अंधविश्वास, मर्यादा की रक्षा करती नारी अपना आदर्श रूप प्रस्तुत करती है। 'होली' 'दृष्टिकोण' 'कदंब के फूल' 'ग्रामीण' आदि में भारतीय नारी की आदर्श रूप का चित्रण देखने को मिलता है। सामाजिक समस्या के साथ राष्ट्रीय समस्याओं का भी चित्रण 'अमराई' ' तांगेवाल' 'गौरी' 'गुलाबसिहं' कहानियों में देखने को मिलता है। 'उन्मादिनी', 'सीधे साढ़े चित्र' इनकी कहानी संग्रह है। भारतीय नारी की मूक विवशता को चित्रित कर हिन्दी साहित्य के माध्यम से अप्रतिम सेवा नारियों के प्रति इनका योगदान रहा है। " इनकी कहानियाँ राष्ट्रीय भावनाएँ ,आदर्श और यथार्थ के मर्मस्पर्शी संघर्षों पर आधारित हैं। समसामयिक राष्ट्र की मानसिक स्थिति का पूर्ण परिचय उनकी कहानियों द्वारा होता है । "6 इनका पहला काव्य संग्रह 'मुकुल' (1930) में प्रकाशित हुआ था। 'त्रिधारा' तथा 'प्रसिद्ध पंक्तियाँ' इनकी अन्य प्रसिद्ध कविता संग्रह है। इनकी कविता इस प्रकार है 'कोयल' 'आराधना' 'उल्लास' 'अनोखा दान' 'उपेक्षा' 'कलह-कारण' 'इसका रोना' 'चलते समय' 'चिंता' 'जीवन फूल' 'खिलौनेवाला' 'तुम' 'झांसी की रानी' 'झांसी की रानी की समाधि पर' 'ठुकरा दो या प्यार करो' 'झिलमिल तारे' 'परिचय' 'पानी और धूप' 'पूछो' 'नीम' 'प्रथम दर्शन' 'प्रभु तुम मेरे मन की जानो' 'प्रतीक्षा' 'प्रियतम से' 'फूल के प्रति' 'मेरी टेक' 'भ्रम' 'मुरझाया फूल' 'मेरा गीत' 'मेरे पथिक' 'बिदाई' 'विजयी मयूर' 'मेरा जीवन' 'मेरा नया बचपन' 'विदा' 'मधुमय प्याली' 'यह कदंब का पेड़' 'वीरों का है कैसा बसंत' 'वेदना' 'साध' 'स्वदेश के प्रति' 'समर्पण' 'व्याकुल चाह' 'जलियावाला बाग में बसंत' गजानन माधव मुक्ति बोध लिखते है " सुभद्रा कुमारी चौहान नारी के रूप में ही सहकार साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त करती हैं। बहन, माता, पत्नी के साथ -साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव उन्होंने व्यक्त किए हैं । उनकी शैली में वही सरलता है, वही आकृत्रिमता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है। "

निष्कर्ष

प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों ने स्त्री जीवन कि त्रासदी को सटीक रूप से अपने साहित्य में स्थान दिया है इसमें अन्य कोई राय नहीं है । उस समय समकालीन परिस्थितियाँ बहुत विषम थी अंग्रेजों का शासन तो दूसरी तरफ पुरुष समाज का बोल बाला । सदियों से पुरुष समाज ने स्त्री को अपने हद-बस में रखने के लिए अनेक बंधीशों का प्रयोग किया और यहीं बंधीश स्त्री जाती के लिए काँटा बन बैठा । इस त्रासदी से स्त्रियों को बाहर निकालने के लिए अनेक साहित्यकारों समाज सुधारकों ने कार्य किया इस दिशा में महिला साहित्यकारों का योगदान बहुत बड़ा रहा है । महिला साहित्यकारों ने उस समय लेखनी के माध्यम से समाज को बदलने और स्त्री समाज के साथ न्याय करने का

प्रयास किया। जैसे विधवा विवाह का समर्थन किया तो बाल विवाह का विरोध कुल मिलकर स्त्री से संबंधित हर एक समस्या पर उस समय आवाज उठाई और यही आवाज एक मिसाल बनकर समाज को परिवर्तन करने कि दिशा में चल पड़ी थी । उस समय कि उन सभी लेखिकाओं को हिन्दी साहित्य जगत शत-शत नमन करता है, करता रहेगा ।

1. डॉ. पुष्पलता सिंह : समकालीन कहानी -युगबोध का संदर्भ ,पृ. 301
2. वही, पृ. 301
3. वही ,पृ. 603
4. सुधाकर पांडे : हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास,(प्रथम संस्करण) पृ. 81
5. सुमित्रा कुमारी सिन्हा : अचल सुहाग कहानी संग्रह, पृ. 3
6. डॉ. पुष्पलता सिंह : समकालीन कहानी :युगबोध का संदर्भ , पृ. 305

Key note (महत्वपूर्ण टिपण्णी)

1. प्रेमचंद पूर्व महिला कहानीकारों की कहानियों की स्त्रियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व को खोजती नजर आती हैं।
2. इस समय कि लेखिकाओं कि कलम ने सदा ही नारी पक्ष लिया था और स्वाधीनता की लड़ाई में स्वतंत्र सेनानियों की आवाज और बुलंदी तक पहुँचने का कार्य इनका रहा है।
3. सजीव भाषा के साथ यथार्थपरक घटनाओं को राष्ट्रीयता से जोड़ना का प्रयास, मानव चरित्र के अनेक मनोभावों से पात्रों की सृष्टि, स्त्री त्रासदी पर सवाल उठाना, स्त्री पीड़ा को समझना, इन पीड़ाओं से स्त्री समाज को मुक्ति की ओर ले जाना, प्रेमचंद पूर्व महिला साहित्यकारों के साहित्य का मूल आशय रहा है।
4. आधुनिक हिन्दी कहानी लेखन में महिला साहित्यकारों का योगदान भी रहा है, आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ एक वह भी हिन्दी भाषी महिला कहानीकार के द्वारा हुआ है यह खासियत हिंदी साहित्य की रही है।
5. सुभद्राकुमारी चौहान की कलम ने सदा ही नारी पक्ष लिया था और स्वाधीनता की लड़ाई में स्वतंत्र सेनानियों की आवाज और बुलंदी तक पहुँचने का कार्य इनका रहा है। जमींदारों तथा अंग्रेजी शासन से त्रस्त सामान्य जन की पीड़ा का चित्रण भी इनके साहित्य में देखने को मिलता है।